# उस्ताद शफात अहमद की वादन शैली एवं रचनाएं

अनिल कुमार शर्मा[1], प्रो. शर्मिला टेलर[2], प्रो. सरोज घोष[3]
1 शोधार्थी, मंच कला विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
2 शोध निर्देशिका, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
3 सह शोध निर्देशिका, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

दिल्ली घराने के सुप्रसिद्ध तबला नवाज़ पदमश्री उस्ताद शफात अहमद का जन्म 20 मई 1954 को दिल्ली में हुआ।[1] इनके पिता उस्ताद छम्मा खाँ दिल्ली घराने के विद्वान तबलिया थे। उस्ताद शफात अहमद का बचपन संगीतज्ञ परिवार में बीतने में कारण इनके दिलो दिमाग में संगीत पूरी तरह से रच बस चुका था। बचपन में जब यह दो या तीन वर्ष के थे तबसे ही इन्होंने रसोई घर में रखे खाली डिब्बे पर तबला बजाना शुरू कर दिया था लेकिन यह सब बाते इनके पिता उस्ताद छम्मा खाँ साहब को मालूम नहीं था।

एक समय की बात है। जब शफात अहमद लगभग पाँच वर्ष के थे।[2] उस समय उस्ताद छम्मा खाँ बाहर से घर पर किसी काम से अचानक आ गये। घर की सीढ़ी चढ़ते हुए सुना कि कोई तबला बजा रहा है। तब उस्ताद छम्मा खाँ साहब ने शफात जी की माता रोशनारा बेगम से पूछा कि तबला कौन बजा रहा था। तब शफात जी की माता जी ने कहा शफात तबला बजा रहा था। छम्मा खॉ साहब ने कहा मैंने तो इसको सीखाया ही नही तो शफात जी की माता जी, रोशानारा बेगम ने कहा की जब आप घर पर नहीं रहते तो यह खाली डिब्बा एवं तबला बजाता रहता है। जब आप घर पर रहते हैं तो आपके डर से यह नहीं बजाता। उस समय लगभग पांच वर्ष की आयु में उस्ताद छम्मा खाँ ने बकायदा शफात को नियमानुसार गण्डा बाँधकर अपना शिष्य बनाया और तबले की विधिवत शिक्षा दी।[3]

शफात जी की शिक्षा में लगातार निरवार आता गया क्योंकि इनके परिवार में संगीत का माहौल होने के कारण दिर भर घर में किसी न किसी कलाकार व शिष्यों का आना जाना लगा रहता था। और इनके शोहबत में भी रहते हुए कई बाते संगीत की यू ही सीख लेते थे। दूसरी तरफ इनके नाना जी उस्ताद चाँद खाँ साहब ने भी इनको सिखाने के लिए बकायदा गण्डा बाँध कर अपना शिष्य बनाया और उन्होंने भी विधिवत गायन की शिक्षा देने लगे। लेकिन शफात जी का रूझान तबला की तरफ ज्यादा होने के कारण इन्होंने तबला ही अपनाया।[4]

शफात जी इतने प्रतिभाशाली थे कि घर के लोगों को यह भी नहीं पता लगा कि यह सितार भी अच्छा बजाने लगे। इनको सितार पर राग झिझोटी बजाना बहुत पंसद था।[5] गायन में शास्त्रीय संगीत के

1 भारती, डॉ. नयन, संस्करण–2002, दिल्ली घराने की संगीत परम्परा और उस्ताद चाँद खाँ, सारांश प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–180
2 म्यूजिक टुडे, डी वी डी 21–2007, उत्सवः अ सेलिब्रेशन आफ इन्डियन म्यूजिक, साइनोसूर इन्फोटेक प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली
3 ताहिरा, बहन, उस्ताद शफात अहमद खाँ, दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर 22 अगस्त 2015 को लिए गए साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य
4 अहमद, उस्ताद इकबाल, सुप्रसिद्ध गायक दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर 8 जुलाई 2018 के लिए गयें साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य
5 बैदी, सरदार दिलीप, सुप्रसिद्ध सितार वादक, गान्धर्व महाविद्यालय दिल्ली में 22 अगस्त 2015 को लिए गये साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

अलावा वह गुलाम अली साहब की गज़ल किशोर कुमार के गीत व अन्य गायकों के गीत बहुत पसन्द था और गाते भी थे।[1]

शफात अहमद के आचार विचार में तो संगीत था ही और देखते, देखते शफात अहमद का नाम चर्चा में होने लगा कि आंजकल उस्ताद छम्मा खाँ साहब का बेटा शफात बहुत अच्छा तबला बजा रहा है। सर्वप्रथम इनका कार्यक्रम दिल्ली संगीत सभा द्वारा आयोजित उभरते कलाकार में सन् 1969 में शाहिद परवेज के सितार वादन के साथ तबला संगत कर अपनी एक अलग छवि बना ली थी। और धीरे–धीरे इनको सभी कलाकार जानने लगे एवं कार्यक्रम में भाग लेने लगे।[2] शफात अहमद आकाशवाणी एवं दूरदर्शन दिल्ली के टॉप ग्रेड के कलाकार हो गये।[3]

इनको सभी संगीत समारोह एवं संगीत सम्मलेन से बुलावा आने लगा। शफात अहमद का कलाकारों के बीच प्रभाव बढ़ने लगा और सभी लोग यह चाहने लगे कि शफात अहमद ही मेरे साथ तबला की संगत करे। शफात अहमद सभी को सम्मान देते थे चाहे वह छोटा हो या बड़ा सभी की बाते ध्यान से सुनते और गम्भीरता से उत्तर देते और सभी से खुशनुमा लहजे में बाते कर अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। और यही कारण रहा कि सभी लोगों के बीच शफात अहमद की अलग छवि बन गई थी। जैसें–जैसे समय बीतता गया शफात अहमद का नाम कई शहरों से होते हुए पूरे हिन्दस्तान व दुनिया में होने लगा।[4]

जब यह जीवित थे उससे पहले लगातार 25 वर्षों तक पडित शिवकुमार शर्मा जी के सन्तूर वादन के साथ तबला संगत कर पूरे विश्व भर में कार्यक्रम दिया ओर दिल्ली घराने का नाम रोशन किया।[5]

शफात अहमद ने भारत रत्न पंडित रविशंकर जी के साथ एवं भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी जी के साथ पद्मविभूषण पंडित शिव कुमार शर्मा, पद्मविभूषण पंडित हरि प्रसाद, चौरसिया, पद्मविभूषण पंडित बिरजू महाराज पदमश्री विदुशी किशोरी अमोनकर, पंडित विनय चन्द्र मौदगल्य पदम विभूषण पंडित जसराज, पद्मविभूषण पंडित बाला सुब्रमव्यय, पदम विभूषण पंडित देब ब्रत चौधरी, पद्म विभूषण उस्ताद अमजद अली खाँ, उस्ताद विलायत हुसैन खाँ उस्ताद इमरत हुसैन खाँ, उस्ताद सुजात हुसैन खाँ, डॉ पद्म भूषण एम॰ राजन पदमश्री शोभना नारायण पदमश्री सतीश व्यास, डा. उमा गर्ग. प्रो. प्रतीक चौधरी राहुल शर्मा, अमान अली, अयान अली, पंडित भवानी शंकर, पद्मभूषण पंडित विश्वमोहन भट्ट, गुरु शोभा कोसर, उस्ताद इकबाल अहमद खाँ, उस्ताद सईद जफर खां ,उस्ताद कमाल साबरी, उस्ताद निशात खाँ, पंडित विक्कू विनायक, पंडित शिवमणी, उस्ताद अदनान सामी, उस्ताद तौफिक कुरैशी,

1 सिंह, प्रो0 हरविन्दर, संगीत विभाग, पी0 जी0 जी0 सी0 जी0 सेक्टर–11, चण्डीगढ़ द्वारा पी0 जी0 जी0 सी0 जी0, चण्डीगढ़ में दिनांक 6 अगस्त 2018 को लिए गयें साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

2 भारती, शरीफ, तबला वादक, दिल्ली, घराना, दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर दिनांक 22 अगस्त 2015 को लिए गए साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

3 अशलम, उस्ताद दानिश, सरोद वादक आकाशवाणी, दिल्ली के द्वारा प्राचीन कला केन्द्र, मोहाली`में दिनांक 22 अगस्त 2018 को लिए गये साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

4 जफर, उस्ताद, सईद, सुप्रसिद्ध सितार वादक, दिल्ली, द्वारा उनके आवास पर 8 जुलाई 2018 को लिए गये साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

5 शर्मा, पंडित शिवकुमार, विश्वख्यिात सन्तूर वादक, मुम्बई द्वारा ताज होटल चण्डीगढ़ में दिनांक 15 नवम्बर 2017 को लिए गये साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

पदमविभूषण सितारा देवी, पद्मश्री मधुप मुदगल, सरदार दिलीप बेदी, आदि नामी गिरामी कलाकारों के साथ तबला संगत कर नाम रोशन किया।[1]

जहाँ उनका तबला सोलो अथवा तबला संगत होता था सभी तरह के श्रोता जैसे मर्मज्ञ श्रोता, रसिक श्रोता, मर्मज्ञ रसिक श्रोता, भावुक श्रोता एवं साधारण श्रोता सभी लोग सुनने के लिए चले आते थे। शफात जी का नाम सुनते ही सभी प्रशंसक इकट्ठा हो जाते। वह इतने प्रसिद्ध हो गये थे कि कोई भी प्रमुख कलाकार उनके साथ गाता बजाता तो उनका कार्यक्रम सफल हो जाता था। शफात अहमद वास्तव में एक अद्भुत कलाकार थे।

## शफात अहमद की वादन शैली

शफात अहमद की वादन शैली दिल्ली घराने की थी क्योंकि इनका जन्म दिल्ली धराने के संगीतज्ञ उस्ताद छम्मा खाँ के घर हुआ था वह दिल्ली घराने के थे। शफात अहमद को दिल्ली घराने की वादन शैली विरासत में मिली। दिल्ली घराने की वादन शैली में बाँया हाथ एवं दाहिनी हाथ के दोनों अगुलियाँ तर्जनी एव मध्यमा का पूर्ण रूप से प्रयोग करते है और बाँया हाथ के तीसरी चौथी अँगुलियाँ का भी प्रयोग न मात्र करते हैं दाहिने में तिरकिट बजाने में तीन अगुलियाँ का भी प्रयोग करते हैं। तर्जनी मध्यमा और अनामिका को भी। शफात अहमद तेटे और तिरकिट अधिकतर दो अँगुली तर्जनी और मध्यमा से बजाते थे। रेला, रौ बजाते वक्त तीनों अगुलियाँ का प्रयोग करते थे। उल्टी तिराकिट भी तर्जनी से बजाया करते थे। और तबला बजाते वक्त हाथ उपर नहीं उठाते थे लेकिन जब अन्य घरानों के बोल को प्रस्तुत करते थे वह हाथ भी उठाते थे। तालों का चयन एवं सामग्री संगीत समारोहो के अनुसार करते थे। इनके स्वतन्त्र वादन का क्रम निम्नानुसार होता था। सबसे पहले जिस ताल में बजाना है। उसका ठेका बजाकर, पेशकारा, पेशकारा में उसकी बढ़त एवं कायदे के बोलों की सुन्दर रचना तिहाई कई लयकारी युक्त बोल पेश करते थे ततपश्चात दिल्ली के कायदें एवं अन्य घरानों के कायदे भी लयकारी युक्त दिखाते हुए उसके पल्टा एवं उसकी उलट व कुछ कायदों को रेले रौं में तब्दील कर समयनुसार कायदा की संख्या कम व ज्यादा कर लेते थे। इसके बाद गत टुकड़ा विभिन्न प्रकार के लयकारी युक्त फरमाइशी बोल बजाया करते थे। अपने स्वतन्त्र वादन के दौरान संगीत की महफिल में बैंठे कलाकारों के बीच संम्वाद होने पर अन्य घराने की रचना भी बखूबी प्रस्तुत कर उनका मन मोह लेते थे। संगत में भी वह चाहे जिस विधा का कलाकार हो उसके साथ भी वैसा करते थे जैसा की कलाकार चाहता था। शफात अहमद के संगत की खास बात यह थी कि वह कहते थे। तबला वादक दर्जी की सूई की तरह होता है जिस प्रकार सूई हर कपड़े को चाहे खद्दर हो सिल्क हो या कोई भी प्रकार का कपड़ा हो वह सुई कपड़े के अनुसार ही उसको सिलती है। इसी प्रकार से तबला वादक जब संगत कर रहा हेाता है। तो उसे सामने वाले कलाकार को अपनी कला के ज्ञान से नीचा नहीं दिखाना चाहिए। बल्कि कलाकार के ज्ञान के हिसाब से तबला वादक को संगत करना चाहिए। शफात अहमद सभी गायक व वादकों के बारे में यह विशेष जानकारी रखते थे किं कौन सा कलाकार क्या चाहता है।

मुख्य कलाकार की सभी गायकी वादन सामग्री को भली भाँति पढ़ लेते थे और हूँ बहू वही सारी बातें तबले पर बजाते थे मानों ऐसा लग रहा होता था। कि तबला गा रहा है।[1] उनके पास ज्ञान का बहुत

1 ताहिरा, बहन, उस्ताद शफात अहमद खाँ, दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर 22 अगस्त 2015 को लिए गए साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

भण्डार था। और संगत का चौमुखी अनुभव था तथा उनको लय लयकारी जाति एवं छन्द की विशेष जानकारी थी। शफात अहमद गायन, वादन एवं, नृत्य में सभी के साथ एक जैसा संगत न करके अलग–अलग उसके स्वभाव के अनुसार सुन्दर बोलों की रचना के द्वारा संगत करते थे। यह शफात अहमद की खूबी थी। इसीलिए सभी के चहेते कलाकार बन गये थे। तन्त्र वाद्य एवं सुषिर वाद्य के साथ वह बोलों के द्वारा लिपटकर व सवाल–जबाव की भी संगति करने मे माहिर थे। जिन लोगों ने भी उनको सुना देखा है, वह भूल नहीं सकते।

## पद्मश्री उस्ताद शफात अहमद की रचना

### तीनताल में कायदा (रचाकार उस्ताद शफात अहमद)

धा ऽ धा ति, ट घे न धा, ती धा गे न, धा गे धि न,

गि न ति ट, धि ना ऽ धा, ति ट धा गे, तिन कि न,

ता ऽ ता ति, ट के न ता, ती ती के ना, ता के ति न,

कि न ते टे, घे ना ऽ धा, तिट धा गे, धि न गि न,

### तीनताल में चक्कर दार टुकड़ा (रचना उस्तद शफात अहमद)

धा ऽ क्र धा, ऽ ना धा ऽ, धि ऽ ता ऽ, किटतकताऽ, कत्त धिर धिर, किटतकतिरकिट, धाऽ धिर धिर , किटतक तिर किट, धा ऽ धिर धिर, किटतकतिरकिट, धाऽ, धा ऽ क्र धा, ऽ ना धा ऽ, धि ऽ ता ऽ, किटततताऽ, कत्त धिर धिर, किटतकतिरकिट, धाऽ धिर धिर, किटतक तिर किट, धा ऽ धिर धिर, किटतकतिरकिट, धाऽ, धा ऽ क्र धा, ऽ ना धा, धि ऽ ता ऽ, किटतकताऽ, कत्त धिर धिर, किटतकतिरकिट, धाऽ धिर धिर, किटतक तिर किट, धा ऽ धिर धिर, किटतकतिरकिट धाऽ,[2]

### झपताल में चक्कर दार टुकड़ा (रचना उस्तद शफात अहमद)

ताकिटधि, किटकत, ताकिटधि, किटकत, दड़ऽन, कत, दड़ऽन, किटकत, तकतिर, किटकत, तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

ताकिटधि, किटकत, ताकिटधि, किटकत, दड़ऽन, कत, दड़ऽन, किटकत, तकतिर, किटकत, तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

ताकिटधि, किटकत, ताकिटधि, किटकत, दड़ऽन, कत, दड़ऽन, किटकत, तकतिर, किटकत, तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

1 राठौर, देवेन्द्र, संगीतकार, मुम्बई, द्वारा, मोबाइल (दूरभाष) पर दिनांक 8 जून 2018 को लिए गये साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य
2 कटारे, ओम प्रकाश, तबला वादक, ग्वालियर द्वारा मोबाइल (दूरभाष) पर दिनांक 29 जून 2018 को लिए गए साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽ, ऽऽ,

तकधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धाऽधिरधिर, किटतकताकिट, धा,

## संन्दर्भ ग्रन्थ सूची


भारती, डॉ. नयन, संस्करण–2002, दिल्ली घराने की संगीत परम्परा और उस्ताद चाँद खाँ, सारांश प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–180

म्यूजिक टुडे, डी वी डी 21–2007, उत्सवः अ सेलिब्रेशन आफ इन्डियन म्यूजिक, साइनोसूर इन्फोटेक प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

ताहिरा, बहन, उस्ताद शफात अहमद खाँ, दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर 22 अगस्त 2015 को लिए गए साक्षत्कार से

अहमद, उस्ताद इकबाल, सुप्रसिद्ध गायक दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर 8 जुलाई 2018 के लिए गयें साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

बैदी, सरदार दिलीप, सुप्रसिद्ध सितार वादक, गान्धर्व महाविद्यालय दिल्ली में 22 अगस्त 2015 को लिए गये साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

सिंह, प्रो0 हरविन्दर, संगीत विभाग, पी0 जी0 जी0 सी0 जी0 सेक्टर–11, चण्डीगढ़ द्वारा पी0 जी0 जी0 सी0 जी0 , चण्डीगढ़ में दिनांक 6 अगस्त 2018 को लिए गयें साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

भारती, शरीफ, तबला वादक, दिल्ली, घराना, दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर दिनांक 22 अगस्त 2015 को लिए गए साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

अशलम, उस्ताद दानिश, सरोद वादक आकाशवाणी, दिल्ली के द्वारा प्राचीन कला केन्द्र, मोहाली में दिनांक 22 अगस्त 2018 को लिए गये साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

जफर, उस्ताद, सईद, सुप्रसिद्ध सितार वादक, दिल्ली, द्वारा उनके आवास पर 8 जुलाई 2018 को लिए गये साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

शर्मा, पंडित शिवकुमार, विश्वख्यिात सन्तूर वादक, मुम्बई द्वारा ताज होटल चण्डीगढ़ में दिनांक 15 नवम्बर 2017 को लिए गये साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

ताहिरा, बहन, उस्ताद शफात अहमद खाँ, दिल्ली के द्वारा उनके आवास पर 22 अगस्त 2015 को लिए गए साक्षत्कार से प्राप्त तथ्य

राठौर, देवेन्द्र, संगीतकार, मुम्बई, द्वारा, मोबाइल (दूरभाष) पर दिनांक 8 जून 2018 को लिए गये साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य

कटारे, ओम प्रकाश, तबला वादक, ग्वालियर द्वारा मोबाइल (दूरभाष) पर दिनांक 29 जून 2018 को लिए गए साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य